बलिदान
दुर्गाप्रसाद खत्री

बलिदान

दुर्गाप्रसाद खत्री

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2025

पहिला बयान

यह आज की नही बहुत पुरानी बात है फिर भी मुझे इस तरह याद है मानो इस घटना को हुए थोड़े ही दिन बीते हो।

आज मैं वृद्ध हूँ पर उस समय युवा था, आज बड़ी-बड़ी मूछों ने मेरे होठों को ढक रक्खा है पर उस समय मसे भीन रही थीं, आज गृहस्थी और दर्जनों बच्चों के जंजाल में पड़ा हुआ हूँ, उस समय यद्यपि झंझटों से ख़ाली तो नहीं फिर भी स्वतन्त्र था, ज़माने को एक खेल की तरह देखता था, गुज़रे की याद न रहती थी और आने वाले की परवाह न थी। उस समय मैं डॉक्टरी पास कर के नया नया निकला था और इसीलिए अपने आगे किसी को कुछ समझता ही न या।

उसी ज़माने का यह किस्सा है।

किसी काम से मुझे मोदपूर जाना पड़ा था। मोदपूर पूरब मे एक गांव है, गांव क्या उसे छोटा मोटा कस्बा ही कहना चाहिये क्यूंकि वहाँ चार हजार से ऊपर की आबादी है और कई ऊँचे दर्जे के व्यापारी बनिये बजाज और छोटे मोटे महाजनों की बदौलत वहाँ काफी रौनक और अमन- चमन रहता है। गांव में यो तो प्रायः फूस और खपरैल के ही मकान भरे है मगर कितने ही पक्के और अधकचरे मकान भी अपना सिर उठाये हुए हैं जो उन्हीं सौदागरों, बनियों और महाजनों की जायदाद है। गांव में

साधारण से अधिक सफाई है क्योंकि वहाँ के नौजवान ज़मींदार राय सीताराम पढ़े लिखे होने के साथ साथ सफाई की कीमत समझते हैं और उसके लिए ख़र्च और मेहनत करने को तैयार रहते हैं। मेरे एक रिश्तेदार इन्हीं के यहाँ नौकर थे जिनके सत्र से मुझे भी कभी- कभी यहाँ जाना पड़ता था तथा इसी सत्र से राय सीताराम से भी यद्यपि दोस्ती तो नहीं लेकिन जान- पहिचान हो गई थीं। इसी मोदपुर में मैंने वह घटना देखी जिसने मेरे पानी जैसे दिल पर भी लकीर खींच दी थी और जिसका हाल आज मैं कहने जा रहा हूँ।

मोदपूर के पूरब तरफ कुछ दूर पर पचासों बिगहों तक फैली हुई आम की एक बहुत बड़ी बारी है। इसी बारी के एक कोने मे एक छोटी बगिया और उसके अन्दर छोटा सा ईंट- चूने का बना हुआ श्री राधाकृष्ण का मन्दिर है। मन्दिर बहुत पुराने ज़माने का है और उसके पास ही एक कुआँ और कुछ मामूली इमारतें भी बनी हुई है जिनमें उधर से थाने जाने वाले मुसाफ़िर कुछ देर टिक कर आराम कर सकते हैं। यह मन्दिर, मकान, बगिया और आम की बारी सब कुछ महंत महादेवदास की जायदाद है जिन्होंने इन्हें अपने गुरु महाराज से पाया है।

जब तक मैं मोदपूर में रहता हूँ इस बगिया में अवश्य एक बार नित्य जाता हूँ क्यूंकि एक तो श्रीराधाकृष्णजी की मूर्ति बड़ी सुन्दर और दर्शनीय है, दूसरे यह स्थान भी रमणीक मनोहर और एकान्त है। कुएँ पर भाग-बूटी छानने और पास की बारी में

निपट कर पीछे वाली बावली में स्नान आदि करने का भी बड़ा सुबीता है। एक नौकर महंत महाराज के हुक्म से हरदम यहाँ मुस्तैद रहता है जो आए गये मुसाफ़िरों के आराम का ख़याल रखता है। इसे मैं बीच- बीच में कुछ दे भी दिया करता था जिससे यह मेरा सब हुक्म बजा लाने को हमेशा मुस्तैद रहता था।

इस बार भी दो साल के बाद जब मैं मोदपूर आया तो नित्य नियमानुसार दूसरे दिन सन्ध्या समय इस बगिया की तरफ़ चला। यह गांव से लगभग कोस भर पर पड़ती थी जिससे यहाँ आने के लिए कुछ जल्दी ही चल देना पड़ता था, आज भी इसीलिये मैं जल्दी ही रवाना हुआ और सूरज डूबने के घंटे भर पहिले ही वहाँ पहुँच गया। परंतु मुझे बिल्कुल खबर न थी कि नियमावली में फ़र्क़ पड़ गया है जिससे मैं मामूली तौर पर धड़धड़ाता हुआ बगिया का फाटक पार कर अन्दर चला गया और मन्दिर की तरफ बढ़ा मगर सभामंडप के पास पहुँचते ही कुछ ऐसी आवाजे सुनने में आई कि रुक जाना पड़ा। दो आदमियों के बातचीत की आवाज मन्दिर के अंदर से आ रही थी जो इस प्रकार थी:

एक आवाज: (जो भारी और किसी ज़्यादा उम्र के आदमी की मालूम होती थी) बेईमान, पाजी, इतना भारी कमीनापन ! अवे तुझको शर्म नहीं आती कि इतना सब कुछ हो जाने पर भी कहता गलती हुई ? वे पाजी ! यह गलती है कि बेइमानी ! भूल है कि नमकहरामी !! तुमको क्या बरसों में मैंने इसीलिये पाला और अपना चेला बना

रक्खा है कि तू मेरी ही आँखों मे धूल झोंके और मेरे ही गले पर छुरी चलावे ! बेहया, तुझे तो चिल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये !!

दूसरा: (जो कम उम्र और आवाज से कुछ डरा हुआ सा मालूम होता था) माफ कीजिये गुरूजी, गलती हुई, धोखा हो गया। मैं यह नहीं समझता था कि आप भी..!

पहिला: (डपट कर) फिर वही बके जाता है ! मैंने नहीं समझा। मैंने नहीं समझा। वे तेरी समझ कहाँ चली गई थी जो जो तैंने इतना नहीं समझा कि तेरे गुरूजी ने जो उसे महीनों से यहाँ टिकाया हुआ है सो कुछ समझ के कि बिना समझे ही ! किसी मतलब से कि वे मतलब ही !! क्या तू इतना नहीं समझ सकता था कि मैंने जो यहाँ परायो का आना जाना बन्द कर दिया --- नौकर तक को हटा दिया, सो क्यों ? इतनी निगरानी रखता हूँ सो किस लिये ? दिन में चार- चार फेरे लगाया करता हूँ सो किस वास्ते ! नामाकूल ! पाजी ! गधा ! सूअर !!

दूसरा: जी.... जी.... आप तो.... मगर.... !

पहिला: अवे चुप रह मगर तगर के बच्चे ! ज़्यादा बोलेगा तो ज़ुबान खींच लूंगा, बड़ा मगर वाला आया है !!

दूसरा: मगर गुरूजी आप तो एक मामूली सी बात के लिये फजूल ही इतना गर्म हुए जाते है !!

पहिला: मामूली बात है ? मामूली बात है ? अबे बोलता क्यों नहीं, यह मामूली बात है ?

दूसरा: आप तो व्यर्थ ही नाराज हो रहे हैं ! जरा सा मैंने झाँक कर हँस दिया इस पर इतना बिगड़ जाने की क्या बात हो गई भला ! मैं उधर कभी पैर भी न रक्खूंगा ! माफ कीजिये ठण्डे होइये !!

पहिला: पैर नहीं रक्खूंगा ! अवे पैर रखने में बाकी ही क्या रहा ! क्या तेरा कोई विश्वास है ! अच्छा बता तू कल रात को कहा था ?

दूसरा: (कुछ हिचकिचाते हुए) जी... मैं... चाँदनी रात की बहार देखने निकल गया था।

पहिला: और रात भर बहार देखता रहा ! और सवेरे उस दरवाज़े के पास खड़ा क्या कर रहा था ? उधर जाने की तुझे क्या जरूरत पड़ गई थी ?

दूसरा: मन में आया कि बगिया में निपट कर तब चलूं, फिर ख्याल आया कि उधर जाने को आपने मना किया है, खड़ा- खड़ा यही सोच रहा था कि किधर जाऊँ, क्या करूँ ?

पहिला: झूठा ! पाजी ! बेइमान ! नमकहराम ! नामाकूल ! मुंह पर झूठ ! अभी अपने मुंह से कह चुका है कि जरा हंस दिया और झाँक लिया तो क्या बिगड़ गया, और अब कहा है कि मैं .... दरवाज़े के पास खड़ा सोच रहा था !!